5

भारतीय काँस्य मूर्ति
Indian Bronzes

5.0 भूमिका

सिन्धु घाटी से प्राप्त ''नर्तकी'' की धातुमूर्ति सबसे प्राचीनतम उदाहरण है। प्राचीन काल की सबसे उल्लेखनीय काँस्य की मूर्तियाँ खास तौर पर दक्षिण भारत में सातवीं शताब्दी में बनीं। यह मूर्तियाँ विदेश तक पहुँचीं। सातवीं शताब्दी से दक्षिण भारत में काँस्य की मूर्तियों की रचना शुरू हुई और बहुत प्रचलित हुई। दसवीं शताब्दी में **चोला** शासकों ने दक्षिण भारत के हिन्दू देवताओं की सर्वोत्तम काँस्य की मूर्तियों की रचना की। मधुच्छिश्ठ (लास्ट वैक्स) द्वारा इन मूर्तियों को बनाया गया है।

5.1 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के बाद आप

- काँस्य मूर्ति बनाने की विधि जान पाएंगे;
- उन राज्यों के नामों का पता चलेगा जहाँ प्रसिद्ध काँस्य मूर्तियाँ मिलती हैं;
- काँस्य मूर्तियों को पहचान पाएंगे;
- काँस्य मूर्तियों को बनाने में किन धातुओं का प्रयोग करेंगे यह जान पाएंगे;
- भारतीय काँस्य मूर्तियों का रचनाकाल भी बता सकेंगे।

नटराज मूर्ति

5.2 नटराजमूर्ति

शीर्षक	–	*नटराज*
रचनाकाल	–	*चोला, 11वीं शताब्दी*
माध्यम	–	*काँस्य*
आकार	–	*ऊँचाई – 98X84cm*
स्थान	–	*तंजौर, तमिलनाडु*
शैली	–	*चोला*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।*

सामान्य परिचय

विभिन्न देवी–देवताओं की काँस्य मूर्तियों में नटराज मूर्ति को सर्वोत्तम और सबसे सुंदर माना जाता है। शिव की इस प्रतिमा की रचना संसार के छंद तथा लयमय जीवन के सम्पादन के साथ मिलाकर की गई है। यद्यपि इसके पीछे सती की कहानी जुड़ी हुई है। इस मूर्ति में मूर्तिकार ने कई प्रतीकों का प्रयोग किया है। इस मूर्ति के चार हाथ हैं। सीधे हाथ में डमरू, बांए हाथ में आग का गोला, तीसरे में अभय मुद्रा, चौथे हाथ की ऊँगली उठे हुए पैर की ओर संकेत कर रही है। मूर्ति के इस अद्भुत संतुलन ने इसे एक महान मूर्ति में बदल दिया है। कलाशास्त्र के अनुसार इस भंगिमा को अतिभंग मुद्रा कहा जाता है। इस मूर्ति द्वारा भगवान की सृजन, नाश तथा रक्षण की अभिव्यंजना व्यक्त होती है।

पाठगत प्रश्नः (5.2)

रिक्त स्थान पूर्ण करें

(क) राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी गई नटराज मूर्ति....................से बनाई गई है।

(ख) इस मूर्ति के एक हाथ में ...., और दूसरे हाथ में ....है।

(ग) 11वीं शताब्दी में बनाई गई यह मूर्ति ....शासन काल की है।

डोकरा काँस्य मूर्ति

5.3 डोकरा काँस्य मूर्ति

शीर्षक	–	*डोकरा मूर्ति*
माध्यम	–	*काँस्य*
रचनाकाल	–	*पारंपरिक*
कलाकार	–	*आदिवासी*
स्थान	–	*बस्तर*

सामान्य परिचय

भारत के मध्य प्रदेश के आदिवासी कलाकार 'लास्ट वैक्स' तकनीक से काँस्य मूर्ति बनाते हैं। संसार की प्राचीनतम् सभ्यताओं जैसे चीनी, ग्रीक, मैसोपोटामियाँ आदि के कलाकारों ने इस तकनीक का प्रयोग किया। प्राचीन भारत में भी इस तकनीक का प्रयोग होता था और आज भी भारत के कई भागों में लोक कलाकार तथा आदिवासी कलाकार इस तकनीक का प्रयोग करते हैं।

इस तकनीक की विधिः–

(क) मिट्टी द्वारा मूर्तियों को बनाकर इसे पकाया जाता है।

(ख) मधुमक्खियों का मोम इन मूर्तियों पर लपेटकर सांचा बनाया जाता है।

(ग) इसके चारों तरफ मिट्टी का लेप किया जाता है और फिर धूप में सुखाया जाता है।

(घ) ताप देकर मोम को पिघला कर निकाला जाता है।

(ङ) इस में पिघली हुई धातु डाली जाती है।

(च) सांचे को तोड़कर मूर्ति निकाली जाता है।

पाठगत प्रश्न (5.3)

इन वाक्यों में कौन–सा ठीक है और कौन–सा गलत, बताएं –

(क) डोकरा काँस्य निर्माण विधि "लास्ट वैक्स" तकनीक से है।

(ख) यह विधि बहुत प्राचीन है।

(ग) इसे पहले पलस्तर द्वारा बनाया जाता है।

श्रम की विजय

5.4 श्रम की विजय

शीर्षक	–	*श्रम की विजय*
माध्यम	–	*काँस्य*
रचनाकाल	–	*1954*
मूर्तिकार	–	*देवी प्रसाद रायचौधरी*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

समकालीन भारतीय मूर्तिकला के इतिहास में डी.पी. राय चौधरी का योगदान महत्वपूर्ण है। यद्यपि मुख्य रूप से वह एक मूर्तिकार थे परन्तु वह एक अच्छे चित्रकार, लेखक, संगीतकार तथा पहलवान भी थे। उनका यह विश्वास था कि कला को व्यवसाय नहीं बनाना चाहिए। कला केवल कला रसिकों को आनन्द देने के लिए है।

प्रारंम्भिक जीवन में अवनीन्द्र नाथ से कला शिक्षा लेने के बाद उन्होंने हिरनमय राय चौधरी से मूर्तिकला की शिक्षा ली। **'श्रम की विजय'** इनकी एक विख्यात कलाकृति है। इस मूर्ति में चार श्रमिकों को एक विशाल प्रस्तर खंड को हिलाने की कोशिश में दिखाया गया है। वास्तव में यह मूर्ति भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के प्रतीक के रूप में दर्शायी गई है, जिस संग्राम में भारतवासियों ने अपना खून पसीना एक कर दिया था।

पाठगत प्रश्न (5.4)

रिक्त स्थान पूर्ण करो–

(क) डी.पी. राय चौधरी मूर्तिकार के साथ–साथ..................तथा .... भी थे।

(ख) प्रारम्भिक जीवन में डी.पी. राय चौधरी ने ....के पास कला शिक्षा प्राप्त की।

(ग) ''श्रम की विजय'' मूर्ति ....का प्रतीक है।

5.5 सारांश

कॉँस्य मूर्तिकला के लिए भारत की प्रसिद्धि प्राचीन काल से है। सिन्धुघाटी सभ्यता से लेकर 13वीं शताब्दी तक इस कला के उक्त नमूने प्राप्त हुए हैं। चोला शासनकाल में कॉँस्य मूर्तिकला केवल देश में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय थी। समकालीन भारतीय मूर्तिकारों ने भी कॉँस्य मूर्तियाँ बनाईं, जिनमें डी.पी. राय चौधरी, रामकिंकर, शंख चौधरी की तरह कई मूर्तिकार शामिल हैं।

5.6 पाठगत प्रश्न के उत्तर

5.2 (क) कॉँस्य

(ख) डमरू, आग का गोला

(ग) चोला

5.3 (क) ठीक

(ख) ठीक

(ग) गलत

5.4 (क) संगीतकार तथा लेखक

(ख) हिरनमय राय चौधरी

(ग) स्वतन्त्रता संग्राम

5.7 मॉडल प्रश्न

(1) नटराज कॉँस्यमूर्ति की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(2) कॉँस्यमूर्ति बनाने की मधुच्छिष्ट (Lost Wax) विधि का वर्णन कीजिए।

(3) कौन–से राजवंश की पोषकता से कॉँस्य मूर्तिकला चोटी तक पहुंची।

5.8 शब्दकोष

(1) मैसोपोटामिया – आज का इराक, इरान